नीरा आर्य 'नागिन': एक स्वतंत्रता सेनानी

अपर्णा भारती
(शोधार्थी)
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

डॉ. रूबी ज़ुत्शी
(प्रोफेसर)
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

शोध - सार :- भारत लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा है। भारत देश को आजाद कराने में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान रहा है। कुछ को वर्तमान में भी याद किया जाता है परन्तु कुछ गुमनामी के अँधेरे में खो गए। स्वतंत्रता पाने में उनके योगदान के विषय में तो दूर, कई लोग उनके नाम से भी अनभिज्ञ हैं। ऐसा ही एक नाम है नीरा आर्य 'नागिन'। वह एक महान देशभक्त, साहसी, संवेदनशील लेखिका एवं स्वाभिमानी स्त्री थी। उन्होंने भारतवर्ष को स्वतंत्र कराने में न केवल योगदान दिया बल्कि अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने बिना किसी के सहारे के जीवनयापन करना शुरू किया। उन्होंने सुभाषचंद्र बोस के प्राणों की रक्षा एवं देश को स्वतंत्र देखने की ललक में अपने पति की हत्या कर दी थी। पति की हत्या के जुर्म में कारावास की सजा होती है। इन्होंने अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन संघर्ष' नामक शीर्षक से लिखी है जिसका प्रथम प्रकाशन 1966 में हुआ था परन्तु आपातकाल में इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित किया गया है। यह आत्मकथा उनके स्वयं के जीवन के साथ - साथ स्वतंत्रता आन्दोलन का जीवंत वर्णन भी प्रस्तुत करती है।

बीज - शब्द :- प्रारंभिक जीवन, पढ़ाई, स्वतंत्रता सेनानी, जासूस, साहसी, स्वाभिमानी नारी, स्वतंत्रता, पतिहंता, देशद्रोही, वृदावस्था आदि।

विषय – वस्तु:- संयुक्त प्रांत (उत्तरप्रदेश) खेकड़ा के सामान्य परिवार में जन्मीं नीरा के माता – पिता का इनके बचपन में ही महामारी में देहांत हो गया। छोटे भाई बसंत की जिम्मेदारी इन पर आना स्वाभाविक ही था। अपने तथा अपने भाई का पेट भरने लायक पैसा कमाने हेतु फूल बेचना प्रारंभ करती हैं। आर्य समाज के मंदिर के सामने छोटी उम्र में फूल बेचते देखकर सेठ छज्जूमल का हृदय द्रवित हो उठा – "गाँव में आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में सेठ छज्जूमल जी आये थे और उन्होंने मुझे फूल बेचते हुए देख लिया और ग्रामवासियों से बात करके मुझ अनाथ को गोद लेकर सनाथ बना दिया।"[1] और वह उन्हें गोद लेकर कलकत्ता अपने साथ ले गया। भगवानपुर के बनी घोष के गुरुकुल में शिक्षा हेतु भेज दिया गया, जिनसे उन्हें संस्कृत का ज्ञान प्राप्त हुआ। इनका विवाह अंग्रेज सरकार के अधिकारी जयरंजन से सम्पन्न किया गया, जल्द ही इनके समक्ष इस रहस्य से पर्दा हट गया कि जिसको उन्होंने जीवनसाथी के रूप में चुना है वह देशद्रोही और लालची है। नीरा जी ने अपना स्वाभिमानी नारी का परिचय तब दिया जब उन्होंने अपने रक्षक भ्राता सुभाषचंद्र बोस के लिए देश के दुश्मन पति से सम्बन्ध – विच्छेद कर अलग रहना स्वीकार करती हैं – "ललिता प्रसाद आर्य के घर में शरण लेकर उन्हीं के घर मैं रहकर कुछ बालिकाओं को संस्कृत का ट्यूशन पढ़ाने लगी - "यह मैंने अपनी आजीविका का साधन बना लिया, क्योंकि कर्म करते रहना ही मनुष्य का धर्म है। आर्य संस्कारों से पोषित होने के कारण किसी पर बोझ मैं बन नहीं सकती थी।"[2]

सुभाषचंद्र बोस जिन्होंने नीरा जी को बचपन में डूबने से बचाकर, उसी वक्त से उनके लिए रक्षक भ्राता बन गए थे। उन्होंने प्रतिज्ञा ली कि वह उनका यह कर्ज अवश्य उतारेंगी। इस हेतु वह रामसिंह के सहयोग से सिंगापुर में भर्ती होने के लिए चली गई और रानी झाँसी रेजिमेंट का हिस्सा बन गई। वह तन – मन से देश को स्वतंत्रता दिलाने में अपनी व्यक्तिगत सेवा में जुट गई। उन्हें अंग्रेज अफसरों की जासूसी करने का अवसर मिलता है परन्तु एक साथी के गिरफ्तार कर लिए जाने पर एक अन्य साथी के साथ हिजड़ों की वेशभूषा में जाकर उसे छुड़ा लाती हैं – " भागते वक्त एक दुर्घटना घट ही गई, जो सिपाही पहरे पर थे, उनमें से एक की बंदूक से निकली गोली राजामणि की दाईं टांग में धंस गई, खून का फव्वारा फूटा। किसी तरह लंगडाती हुई वो मेरे और दुर्गा के साथ एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गई। नीचे सर्च ऑपरेशन चलता रहा, जिसकी वजह से तीन दिन तक हमें पेड़ पर ही भूखे – प्यासे रहना पड़ा। तीन दिन बाद ही हमने हिम्मत की और सकुशल अपनी साथी के साथ आजाद हिन्द फ़ौज के बेस पर लौट आई।"[3] उन्होंने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जान बचाने के लिए पति की हत्या कर दी। नेताजी की सुरक्षा के लिए उन्हें तम्बू के बाहर तैनात किया गया था। ड्यूटी के दौरान उन्हें परछाई दिखी और बिना देर किए पहचान लेती है। जयरंजन ने नेताजी की हत्या के लिए गोलियां चलाई परन्तु गोलियां उनके ड्राइवर को लग गई। इसी दौरान नीरा जी ने उसे परलोक पहुंचा दिया था।

इसी साहसपूर्ण कदम उठाने के लिए नेताजी ने उन्हें 'नागिनी' नाम दिया था - "नेताजी ने मेरे माथे पर हाथ रखा, उनकी अश्रुधारा बह चली, "बहन तुमने मेरी रक्षा के लिए अपने पति के पेट में संगीन घुसेड़कर उन्हें परलोक पहुंचा दिया, तुम सैनिक नहीं, कोई दैवी हो! तुमने नागिन बनकर मातृभूमि का ऋण चुका दिया है। दिल्ली पहुंचकर लालकिले पर शहीदों की स्मृति में जो नामपट लिखा जाएगा, उस पर सबसे पहले आपका नाम अंकित किया जाएगा - एक जीवित बलिदानी नीरा आर्य नागिनी !"[4] पति की हत्या के आरोप में उन्हें गिरफ्तार कर अमानवीय यातनाएं दी जाने लगी। जेल में उनके स्तन काटने का प्रयत्न किया गया। उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों द्वारा सुभाषचंद्र बोस के विषय मे बार – बार पुछने पर जानकारी न देने और ये कहने पर की नेताजी उनके दिल में जिन्दा हैं, जिसे सुनकर जेलर आग बबूला हो गया- "उन्होंने मेरे आँचल पर ही हाथ डाल दिया और मेरी आंगी को फाड़ते हुए फिर लुहार की ओर संकेत किया ... लुहार ने एक बड़ा सा जंबूड औजार जैसा फलवारी में इधर – उधर बढ़ी हुई पत्तियां काटने के काम आता है, उस ब्रैस्ट रिपर को उठा लिया और मेरे दाएं उरोज को उसमें दबाकर असहनीय पीड़ा देते हुए दूसरी तरफ से जेलर ने मेरी गर्दन पकड़ते हुए कहा, "अगर फिर जबान लड़ाई तो तुम्हारे ये दोनों गुब्बारे छाती से अलग कर दिए जाएंगे..."[5] जेल में अमानवीय अत्याचारों से तंग आकर वह जेल का मुयायना करने आए अफसर से औरतों के हक़ में बोलना चाहती है परन्तु पागल कहकर चुप करा जाता है और अफसर के जाते ही बंद कर दिया गया – " मुझे हथकड़ी पहनाकर हवालात में बंद कर दिया गया। दो – चार दिन के बाद मुझ पर 'मुकद्दमा' किया गया और पागलपन में अनाप – शनाप बकने का दोष लगाकर 6 महीने चेन गेंग तथा कमर नंगी करके 20 बैंत मारने का दंड दिया गया।"[6] कलकत्ता जेल से उन्हें द्वीप पर ले जाया गया जहाँ उनके हाथों में हथकड़ियाँ और पैरों में बेड़ियाँ डालकर एक पिंजरे में बंद कर दिया गया। उन्हें शोषण का शिकार भी होना पड़ा। खाने के लिए अचछा भोजन न मिलने पर कप्तान से शिकायत करने के विषय में पहरेदार कहता है – " तुमने नंगे बदन होकर कप्तान साहब के सामने नृत्य करने से इंकार कर दिया था, इसलिए तुम तो ऐसे खाने के लायक भी नहीं हो?"[7] तीन रात और तीन दिन उन्होंने जहाज में चिउड़ा और चना चबाकर कर गुजारे थे। कैदियों की भांति उनके बाल मुंडवा दिए गए। वह देशभक्त नारी थी। जेल में इस सवाल पर कि तुमने अपने पति को क्यों मार डाला और नेताजी को बागी तथा गुंडा कहने पर वह भड़ककर कहती हैं – "मुझे आजादी चाहिए आजादी...अपने देश की...इसलिए अपने पति को मारा...तुम्हारी तरह वह भी अंग्रेजों का पिट्ठू था भडवा कहीं का।"[8] जेल में उन्हें अस्पृश्यता का भी सामना करना पड़ा जब उच्च जाति की औरत से वह छू गई - "एक दिन एक उच्च जाति की महिला कैदी की बर्तन मुझसे छू गया तो बोली, "खसमखानी मेरा बर्तन अपवित्र कर दिया।" और उसने अपना बर्तन दूर दे मारा। तब मैंने अपने दोनों हाथों से उसे दबोच लिया और फिर एकदम दूर हटते हुए मैं बोली, " ले मैंने तो तुझे भी अपवित्र कर दिया ...अब अपने शरीर को भी दूर फेंक दे...तेरे जैसी छूतछात मानने के कारण ही गुलामी भुगतनी पड़ी है हमें।"[9]

नेताजी की जानकारी उनसे उगलवाने के लिए कठोर यातनाएं दी जाने लगी – "उन्होंने ढेकलीनुमा उस यातना यंत्र को छोड़ दिया, मैं धडाम से समुद्र के पानी में डूब गई...मेरी आँख, कान, नाक सबमें नमकीन पानी भर गया और मैंने समझा कि अब मेरा अंतिम समय आ गया है, लेकिन उन्होंने फिर उस यातना यंत्र को ऊपर उठा दिया और फिर मुझसे पूछा, "सुभाष के अलावा कौन ऐसे लोग हैं, जो एक बार फिर आजाद हिन्द फौज बना रहे हैं?"[10] उनके एक साथी कर्ण सिंह तोमर का हवाला देकर उनसे सच जानना चाहते हैं परन्तु अपने कथन पर अडिग रहती है - "उन्होंने एक बार फिर डुबा दिया और फिर तो बार – बार निकालते और डुबाते...यह कहर तब तक मेरे ऊपर बरपाते रहे, जब तक कि मैं बेहोश न हो गई... जब मुझे होश आया तो मैं नग्न पड़ी थी, वे मद्यपान करते हुए राक्षसों की हंसी हंस रहे थे।"[11] जैसे ही होश आने पर जाने को उठती हैं तो बारी ने उन पर जोरदार वार कर दिया। वह समुद्र में गिर गई और आदिवासी इलाके में पहुंच गई। आदिवासी लोग उनके शरीर के मांस के लिए आपस में लड़ने – झगड़ने लगे - देश की आज़ादी के लिए तो मेरी जंग सफल ना हो सकी, अब मेरे शरीर का मांस किसी के खाने के काम आ जाए और हड्डियों का ढांचा इनके अस्त्र – शस्त्र के काम आये तो यह तो मेरे लिए स्वर्ग प्राप्ति से भी बड़ी उपलब्धि होगी।"[12] नीरा जी ने स्वयं को उनको समर्पित कर ओम का उच्चारण करने लगी। वह भी उनकी नकल कर ओम के स्थान पर होम बोलना शुरू कर देते हैं और हाथ से जलती हुई मशालें कुंड में डाल देते हैं। वह उन्हें देवी समझकर उनका आदर सत्कार करते हैं- "नित्य प्रति मेरे आगे आग जलाई जाती, वे लोग आग को पवित्र मानते थे और प्रसाद के रूप में कछुए के अंडे, अधपकी मछली, केचुए आदि मुझे खाने के लिए दिया जाने लगा, कवचों से निकालकर सीपियो के जीव तो ऐसे खिलाए जैसे हम बचपन में मूंगफली छीलकर कर खाते थे, लेकिन मैं तो शाकाहारी थी, हालांकि ब्रिटिश यातना गृह में मैं शाकाहारी कहाँ रही थी भला...मुझे तो कई बार जबरन गोमांस तक खिला दिया गया था और मेरा शरीर और आत्मा दोनों ही अपवित्र हो चुकी थी,लेकिन मन तो मेरा देश की आजादी के लिए तड़प रहा था, इसलिए मेरी आत्मा ने अंदर से कहा, 'ये जो भी खाने को देते हैं, स्वीकार कर लो...उस व्यक्ति को क्या लाभ, जो सम्पूर्ण विश्व को प्राप्त कर ले, किन्तु स्वयं अपनी आत्मा को न पहचानता हो। आत्मा की आवाज साक्षात् ईश्वर की वाणी होती है।"[13] शरीर पर आई चोट का जड़ी - बूटियों से उपचार करते हैं। पहले जैसा

बलिष्ठ और कांतिमय शरीर हो जाने पर उनसे विदा लेने के लिए तैयार हो गई। उन लोगों के उदासी भरे चेहरे को देखकर उन्हें भारतवर्ष की स्वतंत्रता का हवाला देकर वहां से निकलने की उनसे इजाजत लेती हैं। कीमती मोती देकर एक नाव में सहयात्रियों के साथ बैठाकर उन्हें विदा करते हैं। नाव इंडोनेशिया के किनारे जाकर लगी। इंडोनेशिया पहुंचकर मोती बेचकर स्वतंत्रता के लिए योजना बनाने लगी तभी उन्हें सूचना मिलती है कि अंग्रेजों ने भारत देश को स्वतंत्र करने की घोषणा कर दी है। जीवन के अंतिम दिनों में अपने पैतृक गाँव पहुंचकर पुनः फूल बेचना शुरू कर देती हैं। स्वतंत्र भारत देश की विडंबना देखकर निराश होती हैं- "स्वतंत्र भारत में भी रात के बारह बजे वीरान सड़क पर नारी भला कहाँ अभी भी सुरक्षित थी। जब आदमी किसी भूखे, प्यासे, बीमार या असहाय व्यक्ति को देखकर भी उसकी मदद करने से कतराता है, तो दरहसल उस पल वह प्रभु की पुकार का निरादर कर रहा होता है। मेरे प्राणप्रिय खेकड़ा के लोग भी यही कर रहे थे।"[14]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता सेनानी नीरा आर्य साहसी, स्वाभिमानी, देशभक्त एवं प्रथम जासूस नारी थी इन पंक्तियो में उनकी देशभक्ति की उत्कृष्ट इच्छा व्यक्त हुई है – "हे ईश्वर मेरे भारत देश का हरेक नागरिक आत्मनिर्भर हो जाए, मेरा देश दूध, पूत, अन्न – धन्न से सम्पन्न हो जाए, मेरे देश की कीर्ति पताका चहुंओर लहराए, मेरा देश अब सृष्टि के अन्तकाल तक स्वतंत्र रहे और पूरे विश्व की उन्नति चाहता हुआ वसुधैव कुटुम्बकम का पालन करे और हां यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मुझे खेकड़ा ग्राम में पैदा करना। ऐसी मेरी अंतिम इच्छा है मेरे परमेश्वर!"[15] बीमारी की हालात में 1998 में चारमीनार के पास उस्मानिया विश्वविद्यालय में एक गरीब एवं असहाय वृद्धा के रूप में मौत का आलिंगन कर लिया। वीरांगना नीरा आर्य जी का नाम इतिहास मैं चिरस्मरणीय रहेगा।

****

सन्दर्भ सूची

1 आर्य नीरा 'नागिन', आत्मकथा, मेरा जीवन संघर्ष, संस्करण 2022 पृष्ट 14
2 वही पृष्ट 71
3 वही पृष्ट 127
4 वही पृष्ट 133
5 वही पृष्ट 161
6 वही पृष्ट 180
7 वही पृष्ट 167
8 वही पृष्ट 174
9 वही पृष्ट 176 – 177
10 वही पृष्ट 184
11 वही पृष्ट 185
12 वही पृष्ट 187
13 वही पृष्ट 188
14 वही पृष्ट 207
15 वही पृष्ट 208

नवीन शिक्षा नीति 2020 और जनजातीय शिक्षा

विनोद कुमार वर्मा
शोध छात्र
यूजीसी नेट/जेआरएफ & भूगोल

डॉ.के.एस.नेताम
शोध निर्देशक,प्राध्यापक एवम
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग कालेज -
शासकीय संजय गांधी स्मृति स्नातकोत्तर
महाविद्यालय सीधी (मध्य प्रदेश)

सार
नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक परिवर्तनकारी बदलाव का प्रतीक है, जिसका लक्ष्य प्रणाली को अधिक समग्र, लचीला और बहु–विषयक बनाना और 21वीं सदी की जरूरतों के साथ संरेखित करना है। यह नीति छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण सुधार का प्रतिनिधित्व करती है। एनईपी 2020 का मुख्य फोकस आदिवासी समुदायों की शिक्षा है, जो भारत की आबादी का लगभग 8-6% हैं और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण शैक्षिक नुकसान का सामना करना पड़ा है। नीति इन चुनौतियों से निपटने के लिए लक्षित हस्तक्षेप पेश करती है, जिसमें आदिवासी क्षेत्रों में अधिक कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की स्थापना, व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण और शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा का उपयोग शामिल है। इस अध्ययन के दो उद्देश्य हैंरू आदिवासी शिक्षा पर एनईपी 2020 के प्रभाव का विश्लेषण करना और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सिफारिशें प्रस्ता. वित करना। निष्कर्ष बताते हैं कि हालांकि एनईपी 2020 आदिवासी शिक्षा में सुधार के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है, लेकिन महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इनमें अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, योग्य शिक्षकों की कमी और सांस्कृतिक रूप से समावेशी पाठ्यक्रम की आवश्यकता शामिल है। अध्ययन शैक्षिक बुनियादी ढांचे में बढ़े हुए निवेश, योग्य शिक्षकों की भर्ती और उन्हें बनाए रखने और शैक्षिक प्रक्रिया में सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करता है। इन मुद्दों को संबोधित करके, एनईपी 2020 शैक्षिक अंतर को पाट सकता है और आदिवासी समुदायों को सशक्त बना सकता है, सामाजिक–आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा दे सकता है। इन उपायों के सफल कार्यान्वयन से यह सुनिश्चित होगा कि शिक्षा का लाभ समाज के सबसे वंचित वर्गों तक पहुंचे, जिससे समानता, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय विकास के व्यापक लक्ष्यों में योगदान मिलेगा।

परिचय
नई शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण सुधार का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका लक्ष्य इसे और अधिक समग्र, लचीला, बहु–विषयक बनाना, 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप बनाना और प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को सामने लाना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2020½। बहुभाषावाद को बढ़ावा देने, शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने और प्रारंभिक बचपन की शिक्षा के महत्व पर जोर देने के साथ, एनईपी 2020 रटने–सीखने–केंद्रित मॉडल से प्रस्थान का प्रतीक है जो दशकों से भारतीय शिक्षा पर हावी रहा है।एनईपी 2020 में फोकस के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक भारत में आदिवासी समुदायों की शिक्षा है। भारत की कुल आबादी में जनजातियाँ लगभग 8-6% हैं, जिनमें से लगभग 104 मिलियन लोगों की पहचान अनुसूचित जनजाति (एसटी) के रूप में की गई है। ये समुदाय विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैले हुए हैं, प्रत्येक की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और भाषाई विरासत है। ऐतिहासिक रूप से, आदिवासी आबादी को भौगोलिक अलगाव, सामाजिक–आर्थिक चुनौतियों और मुख्यधारा की आबादी से सांस्कृतिक मतभेदों के कारण महत्वपूर्ण शैक्षिक नुकसान का सामना करना पड़ा है।जनजातीय शिक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। शिक्षा सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के